लोगों का खाना चट कर रही हैं कारें

पिछले कुछ वर्षों से जैव ईंधन का काफी शोर रहा है। ऐसा कहा जा रहा है कि जैव ईंधन का उपयोग करने से कार्बन डाईऑक्साइड उत्सर्जन कम होगा और जलवायु परिवर्तन की रफ्तार को थामने में मदद मिलेगी। मगर हाल में कुछ शोध संस्थाओं द्वारा की गई ताज़ा गणनाएं बताती हैं कि उत्सर्जन में जितनी कमी का दावा किया जा रहा है वह वास्तविकता से कोसों दूर है। इसके अलावा जैव ईंधन के संदर्भ में एक मुद्दा यह भी है कि अधिकांश जैव ईंधन का निर्माण प्रमुख खाद्य फसलों से किया जाता है।

युरोप में जैव ईंधन की बहस एक बार फिर शुरू हो गई है। युरोप में 2009 की जैव ईंधन नीति के मुताबिक वर्ष 2020 तक यातायात के कार्बन फुटप्रिंट में 6 प्रतिशत की कमी करने का लक्ष्य रखा गया था। इसके लिए प्रस्ताव यह था कि 2020 तक यातायात में प्रयुक्त ईंधन का 10 प्रतिशत नवीकरणीय स्त्रोतों से आने लगेगा। ऐसा माना गया था कि जैव ईंधन कार्बन डाईऑक्साइड के संदर्भ में सामान्य जीवाश्म ईंधन की तुलना में 35 प्रतिशत की बचत करेंगे। इस नीति के तहत युरोप में जैव ईंधन उद्योग खूब फला-फूला।

मगर नई गणनाएं बता रही हैं कि कार्बन डाईऑक्साइड उत्सर्जन में शायद उतनी कमी नहीं आएगी जितनी सोची गई थी। प्रिंसटन विश्वविद्यालय के पर्यावरण विशेषज्ञ टिम सर्चिंगर का मत है कि उपरोक्त गणनाएं करते समय एक बात को अनदेखा किया गया था। जब खाद्यान्न फसलों का उपयोग जैव ईंधन बनाने में किया जाएगा, तो खाद्यान्न उत्पादन के लिए नई ज़मीनों का इस्तेमाल करना होगा। ये नई ज़मीनें मूलतः जंगल काटकर या पड़ती भूमि को जोतकर प्राप्त होंगी। उनमें पहले से ही काफी सारा कार्बन स्थिर किया हुआ है। जब इन ज़मीनों का उपयोग किया जाएगा तो यह सारा कार्बन वातावरण में पहुंचेगा और उत्सर्जन में हुई किसी भी कमी को निरस्त कर देगा।

हालांकि भूमि उपयोग में परिवर्तन के ऐसे परोक्ष असर की गणना मुश्किल काम है मगर मोटी-मोटी गणनाएं बताती हैं कि इससे जैव ईंधन से मिलने वाले फायदों में दो-तिहाई तक की कमी आ जाएगी। युरोप में इन आंकड़ों को लेकर अच्छी खासी खींचतान मची हुई है। एक तरफ पर्यावरण लॉबी है, तो दूसरी तरफ कृषि, जैव ईंधन उद्योग तथा यातायात लॉबी है।

इन लॉबियों के झगड़े में एक बात छूट ही जा रही है कि जैव ईंधन उत्पादन में खाद्य फसलों के उपयोग के चलते दुनिया भर में खाद्यान्न की कीमतें आसमान छू रही हैं। युरोप का जैव ईंधन उद्योग आजकल अपने उत्पादन कार्य के लिए अरंडी और खाद्य तेल का आयात भी कर रहा है। वहीं यूएसए में जैव ईंधन का उत्पादन मुख्यतः मक्का से किया जा रहा है। ***(स्त्रोत फीचर्स)***